P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जनमानस में व्याप्त रम्य रामायण विषयी कतिपय भ्रान्तियॉं

इन्द्रनारायण झा
व्याख्याता,
संस्कृत विभाग,
राजकीय शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय,
चेचट, कोटा, राजस्थान

सारांश

श्रीमद्वाल्मीकि रचित आदिकाव्य रामायण इस भूमण्डल का प्रथम काव्य ग्रन्थ है। समस्त हिन्दुओं के पूजनीय, श्रद्धास्पद एवं आत्मिक अनुराग की प्रतीक श्रीराम की यह गौरव गाथा आज प्रत्येक हिन्दू का गौरव है। यद्यपि श्रीराम चरित्र का वर्णन अन्य कई ग्रन्थों– पुराणों में भी प्राप्य है तथापि उन सबका आधार वेदतुल्य प्रतिष्ठित श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण ही हैं। अग्निपुराण, गरुडपुराण, स्कन्दपुराण, विष्णु पुराण, हरिवंशपुराण, महाभारत व श्रीमद्भागवत आदि में भी श्रीराम की इस पावन कथा का संक्षिप्त अथवा विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। आनन्दरामायण, अध्यात्म रामायण, भोज रचित चम्पू रामायण, श्री तुलसीदास रचित रामचरितमानस, मैथिल रामायण, तत्वार्थरामायण, योगवाशिष्ठ रामायण सहित लगभग 1000 प्रकार से रामायण विभिन्न भाषाओं में विभिन्न संतों– विद्वानों द्वारा समय –समय में उद्घाटित की गई है। मुगल, जैन व अन्य धर्मावलम्बियों ने भी रामायण का अपनी अपनी भाषाओं में अनुवाद अथवा सृजन किया है। तिब्बती रामायण, ग्रीस में इलियड नामक काव्य, थाइलैण्ड की रामकिमेन तथा इसी प्रकार की रामचरित्र की रचनाएं इण्डोनेशिया, जावा, बर्मा, बाली आदि देशों में पाई जाती है। स्पष्ट है कि रामायण न भारत की सीमाओं को लांघ पूरे विश्व पटल पर स्वयं को प्रतिष्ठित किया है। परतु यह चिन्तनीय है कि श्रीराम के उज्ज्वल चरित्र का प्रशस्तिगान करती इस रामायण के विषय में भारतीय हिन्दू समाज में ही कई भ्रान्तियॉं है जो अनजाने में ही श्रीराम चरित्र पर प्रश्न खडे करती है, और जिन्हें अनजाने में ही हम पीढी दर पीढी संप्रेषित कर रहे है। श्रीराम का स्वर्णमृग के पीछे भ्रमित होकर भागना एक ऐसी ही भ्रान्ति है जो जनमानस में गहराई तक जड़ पकड चुकी है तथा उनके परब्रह्म होने पर प्रश्न खड़ा करती है। जबकि वास्तविक तथ्यानुसार सभी मुख्य रामायणों में इस घटना का ऐसा वर्णन ही नहीं है। लक्ष्मण द्वारा सीता की रक्षा हेतु लक्ष्मण रेखा का खींचा जाना श्रीमद्वाल्मीकि रामायण में वर्णित नहीं है। सीता की स्वयंवर सभा में परशुराम का पहुंचकर कुपित होना तथा लक्ष्मण परशुराम संवाद (दुर्वाद) का वर्णन भी श्रीमद्वाल्मीकिय रामायण में इस प्रकार नहीं किया गया है जैसा जनसाधारण में प्रचलित है। जातिवाद को भारतीय पुरातन शास्त्रों की देन के रुप में प्रचारित किया जाता है। परन्तु रामायण में जातिगत भेदभाव का लेशमात्र भी वर्णन प्राप्त नहीं होता। प्रस्तुत शोधपत्र में ऐसी ही भ्रान्तियों पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द : रामायण, श्रीरामचरितमानस, धनुभंग, उल्लंघन, संप्रेषण।

प्रस्तावना

जीवन को सरल, सानन्द बनाते हुए भी आंतरिक व बाह्म विकास की पराकाष्ठा पर ले जाने का साधन है हमारे शास्त्र, वेद, पुराण, इतिहास इत्यादि ग्रन्थ। सम्यक रीति से इनका अध्ययन – चिन्तन – मनन व पालन हमारे जीवन की दशा व दिशा ही बदल सकता है।

शोध का उद्देश्य

रामायण व श्रीरामचरितमानस मानव जीवन के लिए अत्यन्त उपादेय ग्रन्थ है। जो हमारे आचरण का परिमार्जन करते हैं। परन्तु वर्तमान में बुद्धिजीवियों द्वारा इन्हीं शास्त्रो व ग्रन्थों का अनादर व तार्किक चर्चाओं में श्रीरामचरित्र व रामायण के अन्य पात्रो पर आक्षेप प्रायः दृष्टिगत होता है। बुद्धिजीवीं वर्ग के तर्कसंगत प्रतीत होने वाले ये तथ्य वस्तुतः सत्यता से परे, निराधार व भ्रान्त है। विविध संस्कृत रामायणो का गूढ अध्ययन व शोध का एकमात्र उद्देश्य इन असत्य, निराधार व भ्रामक तथ्यों की वास्तविकता उजागर करना हैं ताकि भारतीय समाज श्रीराम की महान गाथा से ज्ञान, श्रद्धा व

विवकेपूर्वक परिचित हो सके तथा इससे प्रेरणा लेते हुए जीवन सफल करे तथा सदा इस पर गौरवान्वित रहे।

पुष्पवाटिका में सीता एवं श्रीराम का परस्पर दर्शन

श्रद्धा व आस्था रहित कुछ बुद्धिजीवी व्यक्ति श्रीराम पर एक साधरण किशोर की भांति पुष्प वाटिका में सीता के मनोहर रुप को देखकर आसक्त होने का आक्षेप लगाते हैं। श्रीमद्वाल्मीकिय रामायण अध्यात्म व आनन्द रामायण में भी पुष्पवाटिका में श्रीराम सीता भेंट का वर्णन नही है। तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस में अवश्य यह वर्णित है।

सकल सौच करि जाइ नहाए।
नित्य निवाहि मुनिहि सिर नाए।
समय जानि गुर आयसु पाई।
लेन प्रसून चले दोउ भाई।।
भूप बागु बर देखेउ जाई।
जहॅ बसन्त रितु रही लोभाई।।
चहुॅ दिसि चितइ पूॅछि मालीगन।
लगे लेन दल फूल मुदित मन।।
तेहि अवसर सीता तॅह आई।
गिरिजा पूजन जननि पठाई।।
देखि सीय शोभा सुखु पावा।
हृदय सराहत बचनु न आवा।।

केवट प्रंसग

तुलसीकृत रामचरितमानस में वनवास के समय केवट द्वारा श्रीराम के चरण प्रक्षालन का वर्णन है, वहीं अध्यात्म रामायण तथा आनन्द रामायण में केवट द्वारा श्रीराम का चरण प्रक्षालन तब किया जाता है जब राम लक्ष्मण दोनो भाई विश्वामित्र जी के साथ धनुर्यज्ञ के दर्शन हेतु मिथिला जाते है। आनन्द व अध्यात्म रामायण में वनवास के प्रसंग में गूह द्वारा नौका प्रस्तुत कर राम–सीता–लक्ष्मण को बिठाकर स्वयं गुहू व जाति बन्धुओं द्वारा नौका चालन का वर्णन है।वाल्मीकी रामायण में वनवास के समय गंगा पार करने की इच्छा से राम नाव पर बैठते है पर केवट द्वारा चरण– प्रक्षालन का वर्णन यहॉ नहीं है।

स तु दृष्टवा नदीतीरे नावमिक्ष्वाकुनन्दनः ।
तितीर्षुः शीघ्रगां गंगामिदं वचनमब्रबीत।।
आरोह त्वं नरव्याघ्र स्थितां नावमिमां
शनैः सीतां चारोपयान्वक्षं परिगुह्य मनिस्विनीम्।।
ततस्तैचालिता नौका कर्णधारसमाहिता।
शुभस्पयवेगाभिहता शीघ्रं सलिलमत्यगात
(स.52,अ.का., वा.रा.)
विश्वामित्रोऽथ तं प्राह राघवं सहलक्ष्मणम्।
गच्छामो वत्स मिथिलां जनकेनाभिपालिताम् ।।1।।
दृष्ट्वा क्रतुवरं पश्चादयोहयां गन्तुमर्हसि।
इत्युक्त्वा प्रययौ गंगामुत्तर्तु सहराघवः।
तस्मिन्काले नाविकेन निषिद्धो रघुनन्दनः ।।2।।

नाविक उवाच

क्षालयामि तव पादपंकजं ।
नाथ दारुदृषदोः किमन्तरम्।
मनुषीकरण चूर्णमस्ती ते।
पादयोरिति कथा प्रथीयसी ।।3।।
पादाम्बुज ते विमलं हि कृत्वा ।
पश्चात्परं तीरमहं नयामि।
नोचेत्तरी सदृभवती मलेन।
स्याच्चोद्विभो विद्धि कुटुम्बहानिः ।।4।।
इत्युक्त्वा क्षालितौ पादौ परं तीरं ततो गताः।
कौशिको रघुनाथेन सहितो मिथिलां ययौ ।।5।।
(षष्ठ सर्ग,बालकांड, अध्यात्मरामायण)

यह केवट प्रसंग आनन्द रामायण में भी इसी रुप में सारकांड में वर्णित है।

रामं नौकां कांक्षमाणं नौकापो वाक्यमब्रवीत्।
नविक उवाच
आदावहं क्षालयित्वा पादरेणूस्तव प्रभो ।।24।।
पश्चान्नौकां स्पर्शयामि तव पादौ रघूद्वह।
नोचेत्त्वत्पादरजसा स्पृष्टा नारी भविष्यति ।।25।।
तेन संक्षालित पदो नौकां तामारोह सः ।
तत्स्तीर्त्वा जाह्नवी ते मिथिलां मुनिभिर्ययुः ।।28।।
(तृतीयः सर्गः सारकाण्ड, आनन्दरामायण)

तुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस में जब राम सीता व लक्ष्मण के साथ वनवास हेतु जाते है तब केवट द्वारा चरण प्रक्षालन का वर्णन है।

जासु वियोग विकल पसु ऐसे।
प्रजा मातुपितु जिइहहिं कैसे।
बरबस राम सुमंत्र पठाए।
सुरसरि तीर आपु तब आए।
मागी नाव न केवटु आना।
कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना।
चरन कमल रज कहुॅ सब कहई।
मानुष करनि मुरि कछु अहई।।
जौ प्रभु पार अवसि गा चहहू।
मोहि पद पदुम पखारन कहहू।।
केवट राम रजायसु पावा।
पानि कठवता भरि लेई आवा।।
अति आनन्द उमगि अनुरागा।
चरन सरोज पखारन लागा।।
(अ0 का0 तुलसीकृत रा0)

स्वयंवर सभा में जनक के नैराश्यपूर्ण वचन सुनकर लक्ष्मण का रोष

तुलसीकृत रामायण के अनुसार स्वयंवर सभा में किसी भी राजा द्वारा धनुष को हिला तक न पाने पर जनक जी के नैराश्य पूर्ण वचन सुनकर लक्ष्मण आवेशित हो उठते हैं।

जनक बचन सुनि सब नर नारी।
देखि जानकिहि भए दुखारी।।
माखे लखनु कुटिल भई भौहें ।
रदपट फरकत नयन रिसौहें।।
कहि न सकत रघुवीर डर लगे बचन जनु बान।
नाइ राम पद कमल सिरु बोले गिरा प्रमान।।
कहिजनक जसि अनुचित बानी।
बिद्यमान रघुकुल मनि जानी।।
सुनहु भानुकुल पंकज भानू।
कहउॅ सुभाउ न कछु अभिमानू।।
जौ तुम्हारि अनुसासन पावौं।

कंदुक इव ब्रहमाण्ड उठावौं।।
कमल नाल जिमि चाप चढावौं।
जोजन सत प्रमान लै धावौं।।

परन्तु किसी भी संस्कृत मूल रामायण में ऐसे प्रसंग का वर्णन नही मिलता है।

ततः सभायां जनकः पुनः प्राहातिशंकितः ।।81।।
कोऽपिवीरोऽस्ति भूमौ न कि निर्वीरं हि भूतलम्। चेदस्ति कश्चित्सदसि तर्हि सोऽद्यसंभागणे ।।82।।
जीवदानंकरोत्वस्मै दशास्याय नृपाग्रतः। इति वाक्यशराघात भिन्नौ तौ रामलक्ष्मणौ ।।83।।
ददर्शतुर्गाधिजस्य मुखं तौ स्फुरितभ्रुवौ। विश्वामित्रस्तदा प्राह राम चोत्तिष्ठ राघव ।।84।।
किमंतं रावणस्याद्य त्वं पश्यसि संभागणे। जीवयैनं राक्षसेन्द्रं सज्जं कुरु धनुस्त्विदम् ।।85।।
तन्मुनेर्वचनं श्रुत्वा तथेत्युक्त्वा स राघवः।
तदोत्थायासनाद्वेगात्प्रणनाम् मुनीश्वरम् ।।86।।
(3सर्गः, सा.का., आ.रा.)

अध्यात्म रामायण में भी विश्वामित्र द्वारा जनक जी को वह धनुष श्रीराम को दिखलाने तथा तत्क्षण ही श्रीराम द्वारा धनुर्भंग का वर्णन है।

तथेति कोशिकोऽप्याह रामं संवीक्ष्य सस्तिम् ।।20।
शीघ्रं दर्शय चापाग्रयं रामायामिततेजसे । एवं ब्रुवति मौनीश आगताश्चापवाहकाः ।।21।
दर्शयामास रामाय मन्त्री मन्त्रयतां वरः। दृष्ट्वा रामः प्रहृष्टात्मा बध्वा परिकरं दृढम् ।।23।।
गृहीत्वा वामाहस्तेन लीलया तोलयन् धनुः। आरोपयामास गुणं पश्यत्स्वखिलराजसु ।।24।।
ईषदाकर्षयामास पाणिना दक्षिणेन सः।बभञ्जाखिलहृत्सारो दिशः शब्देन पूरयन् ।।25।।
(6 स., बा.का., अ.रा.)

अर्थात मंत्री द्वारा राम को धनुष दिखाने पर तत्क्षण राम ने उस पर रोंदा चढ़ाया और तोड़ डाला।

श्रीमद्वाल्मीकिय रामायण में धनुर्भंग प्रसंग में भी राजा जनक द्वारा राम को धनुर्भंग करने पर अपनी पुत्री सीता का विवाह उनसे करने की बात कहते है। विश्वामित्र की आज्ञा पाकर श्रीराम तुरन्त धनुष पर प्रत्यंचा चढाकर उसे तोड देते है।

यद्यस्य धनुषो रामः कुर्यादारोपणं मुने ।
सुतामयोनिजां सीतां दधां दाशरथेरहम् ।।26।।
(66 स., बा.का., वा.रा.)

अगले सर्ग के प्रथम श्लोक में विश्वामित्र जनक जी से श्रीराम को वह धनुष दिखलाने के लिए कहते है।

जनकस्य वचः श्रुत्वा विश्वामित्रो महामुनिः ।
धनुर्दर्शय रामाय इति होवाच पार्थिवम् ।।1।।
विश्वामित्रः सरामस्तु श्रुत्वा जनकभाषितम्।
वत्स राम धनुः पश्य इति राघवमब्रवीत ।।12।।
लीलया सं धनुर्मध्ये जग्राह वचनान्मुनेः ।।15।।
पश्यतां नृसहस्त्राणं बहुनां रघुनन्दनः।आरोपयत् स धर्मात्मा सलीलमिव तद्धनुः ।।16।।
आरोपयित्वा मौर्वीं च पूरयामास तद्धानुः।तद् बभञ्ज धनुर्मध्ये नररेष्ठो महायशाः ।।17।।
(सर्ग67 बा. का.वा. रा.)

इस प्रकार मूल रामायण में कहीं भी लक्ष्मण द्वारा जनक को रोषपूर्ण वचन कहना वर्णित नहीं है। सभी संस्कृत रामायण में श्रीराम द्वारा विश्वामित्र की आज्ञा पाकर धनुर्भंग करने का ही वर्णन है।

स्वयंवर सभा में परशुराम का आगमन एवं क्रोध

जनमानस में ऐसी भ्रांति है कि परशुराम ने स्वयंवर सभा में आकर शुभ कार्य में विघ्न उत्पन्न किया तथा उनके क्रोधपूर्ण व्यवहार से लक्ष्मण भी आवेशित हुए तथा दोनो में दुर्वाद हुआ। जो लक्ष्मण परशुराम संवाद के रुप में जाना जाता है। तथा यह प्रसंग ब्राह्मण क्षत्रिय के पुरातन द्वेष रुप में प्रचारित किया जाता है। परन्तु यथार्थ में किसी भी संस्कृत मूल रामायण में परशुराम जी का सीता की स्वयंवर सभा में आगमन वर्णित ही नही है, अपितु इन सभी ग्रन्थों में विवाहोपरान्त जब दशरथ अपने पुत्रों – पुत्रवधुओं सहित अयोध्या को लौटते हैं तब मार्ग में परशुराम जी से भेंट होने का वर्णन है।

रामदाशरथे वीरवीर्यं ते श्रुयतेऽद्भुतम।
धनुषो भेदनं चैव निखिलेन मया श्रुतम् ।।1।।
तदिदं घोरसंकाशं जामदग्न्यं महद्धनुः।
पूरयस्व शरेणैव स्वबलं दर्शयस्व च ।।3।।
(स.75, बा.का., वा.रा)
वीर्यहीनमिवाशक्तं क्षत्रधर्मेण भार्गव।
अवजानासि मे तेजः पश्यमेऽद्य पराक्रमम् ।।3।।
इत्युक्त्वा राघवः क्रुद्धो भार्गवस्य वरायुधम्।
शरं च प्रतिजग्राह हस्ताल्लघुरपराक्रमः ।।4।।
(स.76, बा.का., वा.रा)
आरोप्य स धनु रामः शरं सज्यं चकार ह।
जामदग्न्यं ततोरामं रामः क्रुद्धोऽप्रवीदिदम्। ।।5।।

अध्यात्म रामायण में मिथिलापुरी से तीन योजन चलने पर मार्ग में परशुराम से भेंट होना वर्णित है।

अथ गच्छति श्रीरामे मैथिलाद्योजनत्रयम्।
निमित्तान्यतिघोराणि ददर्श नृपसत्तमः।।1।।
कोटिसूर्य प्रतीकाशं विधुत्पुञ्जसमप्रभम्।
तेजोराशिं ददर्शाय जामदग्न्यं प्रतापवान् ।।6।।

तत्पश्चात् परशुराम कठोर वाणी में राम को वैष्णव धनुष रोंदने के लिए कहते है। इस पर श्रीराम रोषपूर्वक परशुराम के हाथ से धनुष छीनकर अनायास ही रोंदा चढाते है। मूल रामायण के वर्णनानुसार श्रीराम ही परशुराम को अपने व्यवहार व वचनों से सन्तुष्ट करते है। इन ग्रन्थों में रामानुज लक्ष्मण कहीं भी वाचाल अथवा अशिष्ट व्यवहार करते परिलक्षित नहीं होते। स्पष्ट है कि जनसामान्य में आरोपित लक्ष्मण की वाचालता, ज्येष्ठजनों से अशिष्टता अथवा दुर्वाद मात्र एक भ्रान्ति है। इस प्रकार लक्ष्मण को क्षत्रियों का प्रतिनिधि व परशुराम को ब्राह्मण रुप में रखकर दोनो के दुर्वाद को ब्राह्मण व क्षत्रियों के द्वेष रुप में भ्रामक प्रचार का खण्डन होता है। रामायण में सर्वत्र जातिगत प्रेम, समरसता व बन्धुत्व ही दृष्टिगत होता है।

सीता द्वारा प्रेरित करने पर श्रीराम का स्वर्णमृग के पीछे दौडना

न केवल परधर्मावलम्बियों, विधार्मियों द्वारा अपितु नास्तिक व तथाकथित बुद्धिजीवियों द्वारा यह संशय प्रस्तुत किया जाता है कि स्त्री के उकसाने से स्वर्णमृग के पीछे

भागने वाला राम परब्रह्म कैसे हो सकता है। तथा आस्तिकों एवं भक्तों द्वारा इसे प्रभु–लीला मात्र कहकर सन्तुष्ट करने का निरर्थक प्रयास किया जाता है। इस सम्बन्ध में सभी संस्कृत मौलिक रामायण एकमत हैं।

अदृष्टपूर्वं दृष्ट्वा तं नानरत्नमयं मृगम्।
विस्मयं परमं सीता जगाम जनकात्मजा ।।35।।
(42 सर्गः, अ.का.,वा.रा.)

आहूयाहूय च पुनस्तं मृगं साधु वीक्षते।
आगच्छागच्छ शीघ्रं वै आर्यपुत्र सहानुज।।3।।
तावाहूतौ नरव्याघ्रौ वैदेह्या रामलक्ष्मणौ।
वीक्षमाणौ तु तंदेशं तदा ददृशतुर्मृगम् ।।4।।
शंकमानस्तु तं दृष्ट्वा लक्ष्मणो वाक्यमब्रवीत।
तमेवैनमहं मन्ये मारीचं राक्षसं मृगम् ।।5।।
(43 सर्गः, अ.का.,वा.रा.)

स्वर्णमृग देखकर विस्मित व उत्सुक होकर सीता श्रीराम व लक्ष्मण को बुलाती हैं तथा वह मृग दिखाती है। परन्तु लक्ष्मण को तुरन्त ही संदेह होता है और वे श्रीराम से स्पष्ट कहते है कि यह मृग रुप में मारीच ही है। परन्तु सीता उस मृग को क्रीडार्थ आश्रम में रखने हेतु श्रीराम से आग्रह करती हैं।

यदि वायं तथा यन्मां भवेद् वदसि लक्ष्मण।
मायैषा राक्षसस्येति कर्तव्योऽस्य वधो मया ।।38।।
(43 सर्गः, अ.का.,वा.रा.)

अर्थात् लक्ष्मण ! जैसा तुमने कहा है वैसा ही यह मृग हो, यदि यह राक्षसी माया हो तो भी इसका वध ही मेरा कर्त्तव्य है।

कुछ बुद्धिजीवियों लोगो का यह भी मत है कि श्रीराम स्वर्णमृग कामांसभक्षणहेतु वध करना चाहते थे जबकि सभी मूल संस्कृत रामायणों में वनवास में राम सीता लक्ष्मण का तपस्वियों जैसे कंद मूल फल पर ही निर्भर रहने का वर्णन है।

हत्वैतच्चर्म चादाय शीघ्रमेष्यामि लक्ष्मण ।।50।।
(स.43, अ.का., वा.रा.)
क्रीडार्थं मां मृग ंचेमं धृत्वा देहि रघूत्तम ।।89।।
(स. 7, सा.का., आ.रा.)

अध्यात्म रामायण में भी लक्ष्मण स्वर्णमृग को निःसंदेह मारीच होना बताते है।

मारीचोऽत्र न सन्देह एवंभूतो मृगः कुतः ।।9।।
श्रीराम उवाच
यदि मारीच एवायं तदा हन्मि न संशयः।
मृगश्चेदानयिष्यामि सीताविश्रमहेतवे।।10।।
(स.7,अ.का., अ.रा.)

लक्ष्मण द्वारा लक्ष्मण रेखा खींचना

लक्ष्मण द्वारा सीता की रक्षार्थ लक्ष्मण रेखा खींचना एवं सीता द्वारा लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन प्रचलित है। वाल्मिकी रामायण में सीता द्वारा हा लक्ष्मण की ध्वनि सुनने पर वे लक्ष्मण को राम के पास शीघ्र पहुँचने के लिए कहती हैं तथा दुर्वाद करती है। तब लक्ष्मण सीता को प्रणाम करश्रीराम के पास चल देते है।

ततस्तु सीतामभिवाद्य लक्ष्मणः।
कृताञजलिः किंचिदभिप्रणम्य।।
अवेक्षमाणो बहुशः समैथिलीं।
जगाम रामस्य समीपमात्मवान् ।।40।।
(स.45, अ.0का., वा.रा.)

इत्युक्त्वा वनदेवीभ्यः समर्प्य जनकात्मजाम् ।।36।।
ययौ दुःखातिसंविग्नो राममेव शनैःशनैः।
(सर्ग 7 अ. का. अ. रा.)

तुलसी रचित मानस में भी लक्ष्मण रेखा का उल्लेख नहीं है। आनन्द रामायण में अवश्य इसका उल्लेख है।

इत्युक्त्वा धनुषः कोर्या कृत्वा रेखां समंततः।
बाह्यदेशे पंचवट्याः सौमित्रिः परिधोपमाम्। ।।100।।
(सर्ग 7 सा. का. आ. रा.)

रावण की मृत्यु का भेद विभीषण द्वारा बताना

विभीषण पर घर का भेदी होकर रावण की मृत्यु का रहस्य श्रीराम राम के समक्ष उजागर करने का आरोप लगा दिया जाता है। जबकि वाल्मिकी रामायण में श्रीराम अपने सारथी मातलि द्वारा स्मरण कराने पर रावण के वक्ष पर तीर मारते हैं। बाण के आघात से हृदय विदीर्ण होने पर रावण की मृत्यु वर्णित है। नाभि के अमृत कुण्ड की बात वाल्मिकी रामायण में वर्णित नही हैं। आ0 रा0 व अ0 रा0 में यह वर्णन प्राप्त होता है पर यहॉ भी हृदय के विदीर्ण होने से ही रावण वध का वर्णन हैं।

निष्कर्ष

ये भ्रामक तथ्य कदाचित् विधर्मियों द्वारा अथवा आंग्लशासन के दौरान लोभ अथवा भयवश क्षेपित प्रतीत होते हैं। अतः आज महती आवश्यकता है कि इन भ्रान्तियों से मुक्त हो पूर्णतः विशुद्ध, यथार्थ व मौलिक रामकथा ही संप्रेषित हो। जिससे सभी भारतीय व आने वाली पीढियां बिना प्रश्न चिन्ह खडे किये रामकथा को स्वीकार करे, उसमें श्रद्धा बनायें रखें तथा गर्व और सम्मान के साथ श्रीराम की इस गौरव गाथा का यशोगान सदा–सदा करती रहे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (हिन्दी अनुवाद सहित), महर्षि वाल्मिकी, गीता प्रेस। ।*
2. *श्रामचरित मानस (हिन्दी अनुवाद सहित), तुलसीदास, गीता प्रेस।*
3. *आनन्दरामायण (ज्योत्स्नाटीका सहित) पं0 रामतेज पाण्डेय, चौखंबा संस्कृत प्रतिष्ठान।*
4. *अध्यात्मरामायण (हिन्दी अनुवाद सहित), अनुवादक, मुनिलाल, गीता प्रेस।*
5. *श्रीमद्भागवत (हिन्दी अनुवाद सहित), गीता प्रेस।*
6. *महाभारत (हिन्दी अनुवाद सहित), गीता प्रेस ।*